**DAINIK JAGRAN, KANPUR CITY PAGE- I, 27-04-2025**

# डिस्लेक्सिया से प्रभावित बच्चों की पहचान का तरीका बताया

**आइआइटी की ओर से एनएलके अकादमी में आयोजित कार्यशाला में 30 से अधिक शिक्षकों को किया गया जागरूक**

जासं ,कानपुर : स्कूली छात्रों में डिस्लेक्सिया और डिस्ग्राफिया की पहचान करने और उनकी सीखने की प्रवृत्तियों में अपेक्षानुरूप सुधार करने के मकसद से आइआइटी कानपुर ने शिक्षकों की जागरूकता व प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की है। एनएलके अकादमी में आयोजित कार्यशाला में शिक्षकों को बताया गया कि किस तरह से डिस्लेक्सिया प्रभावित बच्चों की पहचान की जा सकती है।

स्कूलों के शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक मदद को मजबूत करने के लिए आयोजित कार्यशाला में डिस्लेक्सिया और डिसग्राफिया से प्रभावित बच्चों की आवश्यकताओं के बारे में विशेषज्ञों ने जानकारी साझा की। बताया गया कि डिस्लेक्सिया एक प्रकार की सीखने की क्षमता में कमी है। बच्चों की न्यूरोलाजिकल स्थिति को समय पर पहचानकर उन्हें इससे निपटने में मदद करनी चाहिए। आइआइटी कानपुर के उप निदेशक प्रो. बृजभूषण ने बताया कि डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों की मदद के उद्देश्य से कार्यक्रम की शुरुआत की गई जिसके तहत कानपुर के ग्रामीण क्षेत्र, वाराणसी, गाजियाबाद, नोएडा, फरीदाबाद और गुरुग्राम में सरकारी विद्यालयों को चिह्नित किया जा रहा है। इन स्कूलों के शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर परामर्शदाता के तौर पर तैयार किया जाएगा। कार्यशाला में 30 से अधिक शिक्षकों ने हिस्सा लिया है।

RASHTRIYA SAHARA (PAGE- 06) 27-04-2025

# डिस्लेक्सिया पीड़ित बच्चों के लिये IIT ने की पहल

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

**कानपुर।**

डिस्लेक्सिया एक प्रकार की लर्निंग डिसएबिलिटी है, जो खासकर पढ़ाई से जुड़ी समस्याओं से संबंधित होती है। बच्चों में होने वाली इस न्यूरोलॉजिकल स्थिति को समय पर पहचानकर उन्हें इससे निपटने में मदद करनी चाहिए, जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल बनाया जा सके। इसके लिए सबसे जरूरी है जागरूकता, क्योंकि ज्यादातर लोग ऐसी स्थिति में बच्चों का स्वभाव समझने में असमर्थ होते है। इस बात को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, आईआईटी कानपुर की ओर से डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों के लिए एक पहल की गई है। कानपुर के ग्रामीण क्षेत्र, वाराणसी, गाजियाबाद, नोएडा, फरीदाबाद और गुरुग्राम में सरकारी विद्यालयों को पहचान कर शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर परामर्शदाताओं के प्रतिस्थापन के तौर पर तैयार किया जाएगा।

कार्यशाला में छात्र-छात्राओं को संबोधित करते प्रोफेसर। फोटो : एसएनबी

इस पहल की शुरुआत कानपुर के एनएलके अकादमी से हुई। क्यूट ब्रेन्स प्राइवेट लिमिटेड ने 24 अप्रैल को एनएलके अकादमी में एक प्रभावशाली कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 30 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। डाना फाउंडेशन के सीएसआर समर्थन और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के स्टार्टअप इन्क्यूबेशन और इनोवेशन सेंटर की सहायता से, क्यूट ब्रेन्स सरकारी और निजी प्राथमिक स्कूलों को मार्गदर्शन देने के लिए समर्पित है।

इस नेक कार्य को लेकर आईआईटी के उप निदेशक एवं ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. ब्रजभूषण ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि डाना फाउंडेशन नाम की कंपनी के सीएसआर फंड की मदद से सरकारी विद्यालयों को लक्ष्य बनाया गया है, क्योंकि इनमें आने वाले गरीब बच्चे पढ़ते है और वहां कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। पूर्व में वाराणसी में एक कंपनी की मदद से

## एनएलके अकादमी में कार्यशाला का आयोजन

प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया था, जिसमें शिक्षकों को तैयार किया गया। वहां 100 बच्चों पर काम करने का लक्ष्य है और 59 बच्चों का मूल्यांकन हो चुका है, जबकि बाकी का परीक्षण किया जा रहा है। इनमें चार बच्चे इस बीमारी से पीड़ित मिले है। डिस्लेक्सिया के लक्षण और पहचान के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि डिस्लेक्सिया एक न्यूरोलॉजिकल स्थिति है, जो पढ़ने, लिखने, वर्तनी और कभी-कभी बोलने में कठिनाई का कारण बनती है। यह एक सामान्य शिक्षण अक्षमता है, जो बुद्धि से संबंधित नहीं है। डिस्लेक्सिया वाले लोग अक्सर शब्दों, अक्षरों या ध्वनियों को संसाधित करने में परेशानी महसूस करते है, जिससे पढ़ने की गति धीमी हो सकती है या शब्दों को समझने में दिक्कत हो सकती है। डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए आईआईटी कानपुर लगातार प्रयासरत है।

# डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों के लिए आईआईटी की पहल रखी कार्यशाला

**कंपूमेल ब्यूरो/ कानपुर।** डिस्लेक्सिया एक प्रकार की लर्निंग डिसएबिलिटी है, जो खासकर पढ़ाई से जुड़ी समस्याओं से संबंधित होती है। बच्चों में होने वाली इस न्यूरोलॉजिकल स्थिति को समय पर पहचानकर उन्हें इससे निपटने में मदद करनी चाहिए, जिससे उनका भविष्य उज्जवल बनाया जा सके। इसके लिए सबसे जरूरी है जागरूकता, क्योंकि ज्यादातर लोग ऐसी स्थिति में बच्चों का स्वभाव समझने में असमर्थ होते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, आईआईटी कानपुर की ओर से डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों के लिए एक पहल की गई है। कानपुर के ग्रामीण क्षेत्र, वाराणसी, गाजियाबाद, नोएडा, फरीदाबाद और गुरुग्राम में सरकारी विद्यालयों को चिह्नित कर शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर परामर्शदाताओं के प्रतिस्थापन के तौर पर तैयार किया जाएगा।इस पहल की शुरुआत कानपुर के हृस्थ अकादमी से हुई। जहां, सरकारी स्कूलों में मनोवैज्ञानिक मदद को मजबूत करने, शिक्षकों के बीच डिस्लेक्सिया और डिसग्राफिया से प्रभावित बच्चों की आवश्यकताओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने और डिस्लेक्सिया के लिए गैर-क्लिनिकल आकलनों का विस्तार करने की अपनी प्रतिबद्धता के तहत, क्यूट ब्रेन्स प्राइवेट लिमिटेड ने 24 अप्रैल 2025 को कानपुर के हृस्थ अकादमी में एक प्रभावशाली कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 30 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। डाना फाउंडेशन के ष्स्क्र समर्थन और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के स्टार्टअप इन्क्यूबेशन और इनोवेशन सेंटर (स्ढ्ढष्ट की सहायता से, क्यूट ब्रेन्स सरकारी और निजी प्राथमिक स्कूलों को मार्गदर्शन देने के लिए समर्पित है। इसका उद्देश्य माता-पिता और शिक्षकों को संवेदनशील बनाना, गैर-क्लिनिकल आकलनों में सहायता करना और डिस्लेक्सिया और डिसग्राफिया से पीड़ित छात्रों के लिए सहायक एप्लिकेशन (ष्टष्ठ का उपयोग करके एप्लिकेशन-आधारित हस्तक्षेप प्रदान करना है। इस नेक कार्य को लेकर आईआईटी के उप निदेशक एवं ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर ब्रजभूषण ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि च्द्दाना फाउंडेशन नाम की कंपनी के सीएसआर फंड की मदद से सरकारी विद्यालयों को लक्ष्य बनाया गया है, क्योंकि इनमें आने वाले गरीब बच्चे पढ़ते हैं और वहां कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। पूर्व में वाराणसी में एक कंपनी की मदद से प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया था, जिसमें शिक्षकों को तैयार किया गया। वहां, 100 बच्चों पर काम करने का लक्ष्य है और 59 बच्चों का मूल्यांकन हो चुका है, जबकि बाकी का परीक्षण किया जा रहा है। इनमें चार बच्चे इस बीमारी से पीड़ित मिले हैं। डिस्लेक्सिया के लक्षण और पहचान के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा, च्डिस्लेक्सिया एक न्यूरोलॉजिकल स्थिति है, जो पढ़ने, लिखने, वर्तनी और कभी-कभी बोलने में कठिनाई का कारण बनती है। यह एक सामान्य शिक्षण अक्षमता है, जो बुद्धि से संबंधित नहीं है। डिस्लेक्सिया वाले लोग अक्सर शब्दों, अक्षरों या ध्वनियों को संसाधित करने में परेशानी महसूस करते हैं, जिससे पढ़ने की गति धीमी हो सकती है या शब्दों को समझने में दिक्कत हो सकती है। डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए आईआईटी कानपुर लगातार प्रयासरत है। आने वाले समय में जागरूकता को बड़े स्तर पर ले जाया जाएगा।

# Startup Incubation and Innovation Centre, IIT Kanpur (incubatoriitk)'s Post

**Startup Incubation and Innovation Centre, IIT Kanpur (incubatoriitk)**
30,240 followers
20h · Edited

Cute Brains Pvt. Ltd., an SIIC-incubated startup, organized a teacher training workshop at NLK Academy, Kanpur, with CSR support from the Dana Care Foundation.

The session equipped 30 teachers to identify and support children with dyslexia and dysgraphia using non-clinical assessments and the startup's app-based tool, AACDD. This initiative reflects Cute Brains' commitment to strengthening psychological support and inclusive school learning.

SIIC, IIT Kanpur continues to foster impactful innovations by supporting startups working at the intersection of education, technology, and social change.

Indian Institute of Technology, Kanpur | Cute Brains | Prof. Braj Bhushan | Prof. Deepu Philip | Anurag Singh | Piyush Mishra | Sanchita Chaudhary | Sarvesh Sonkar | Deepti Chugh | Salonee Patro | Vanshika Srivastava | Shriya D. | Vivek Kumar | Shiwanshi Pandey | Monishka Sharma |

DAINIK JAGRAN, KANPUR CITY PAGE- IV, 24-04-2025

# तारे जमीं के छुएं आसमां, आइआइटी देगा मुकाम

## देश भर के छह शहरों में डिस्लेक्सिया पीड़ित 700 बच्चों पर आज से शुरू होने जा रहा अभियान

अनुराग मिश्र • जागरण

कानपुर: फिल्म तारे जमीं पर में छोटा बच्चा था ईशांत नंद किशोर अवस्थी यानी ईनू। दिखने में उग्र स्वभाव वाला और पढ़ाई के प्रति बेपरवाह। विद्यालय बदला और वहां मिले रामशंकर निकुंभ यानी आमिर खान। उन्होंने उसकी डिस्लेक्सिया की तकलीफ समझी और उसकी मदद की तो वो तारा चमक उठा। हमारे आपके बीच भी ऐसे तारे हैं जिन्हें ये दिक्कत है लेकिन 50 बच्चों की क्लास में शिक्षक उन्हें भगवान भरोसे छोड़ देते हैं।

अब भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इन बच्चों का हाथ थामेगा। इसके लिए कानपुर के ग्रामीण क्षेत्र के साथ वाराणसी, गाजियाबाद, नोएडा, फरीदाबाद और गुरुग्राम में सरकारी विद्यालयों को चिह्नित कर शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर काउंसलर के रिप्लेसमेंट के तौर पर तैयार किया जाएगा। वह टैब पर साफ्टवेयर की मदद से नानक्लीनिकल असेसमेंट कर बच्चों की पहचान करेंगे और फिर उन्हें अलग से समय देकर उनकी दिक्कतों को दूर करेंगे ताकि ये बच्चे भी अन्य बच्चों की तरह मुख्य धारा से जुड़ सकें। विशेष तौर पर फोकस सरकारी विद्यालय रहेंगे। 24 अप्रैल को आइआइटी में 30 शिक्षकों के प्रशिक्षण के साथ पहले चरण का अभियान शुरू होगा और दिसंबर तक अभियान चलाकर 700 बच्चों के सर्वांगीण विकास पर काम किया जाएगा।

आइआइटी के उप निदेशक एवं ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो.ब्रजभूषण और उनकी टीम ने ऐसा साफ्टवेयर तैयार किया है, जिसकी मदद से पढ़ने, लेखन और भाषा कौशल की जांच की जाती है। पांच से 10 साल तक के बच्चों को उनकी लिखावट के आधार पर डिस्लेक्सिया की पहचान करना आसान हो जाता है। दरअसल विशेषज्ञों ने हिंदी वर्णमाला, स्वर और व्यंजन को आधार बनाते एप को विकसित किया। इस एप में सबसे पहले स्क्रीन पर काले रंग का अक्षर बना नजर आता है, जबकि उसके बगल में ही दो रंगबिरंगे डाट्स (बिंदु) बने रहते हैं। छात्र को उसी डॉट्स की मदद से अक्षर बनाना होता है। अगर अक्षर सही बना तो काले अक्षर का रंग बदलकर पीला हो जाता है। दूसरे चरण में छात्र को जिगजैग पजल्स दिए जाते हैं, जबकि तीसरे चरण में उसे शब्द और मात्रा पर पहचान करना होता है। प्रो.ब्रजभूषण बताते हैं कि दाना फाउंडेशन नाम की कंपनी के सीएसआर फंड की मदद से सरकारी विद्यालयों को लक्ष्य इसलिए बनाया है क्योंकि इनमें आने वाले गरीब बच्चे पढ़ते हैं और वहां कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। पूर्व में वाराणसी में एक कंपनी की मदद से प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया था जिसमें शिक्षकों को तैयार किया गया। वहां 100 बच्चों पर काम करने का लक्ष्य है और 59 बच्चों का मूल्यांकन हो चुका है जबकि बाकी का परीक्षण किया जा रहा है। इनमें चार बच्चे इस बीमारी से पीड़ित मिले हैं।

**डिस्लेक्सिया के लक्षण और पहचान:** डिस्लेक्सिया एक न्यूरोलॉजिकल स्थिति है जो पढ़ने, लिखने, वर्तनी और कभी-कभी बोलने में कठिनाई का कारण बनती है। यह एक सामान्य शिक्षण अक्षमता है जो बुद्धि से संबंधित नहीं है। डिस्लेक्सिया वाले लोग अक्सर अक्षरों, शब्दों या ध्वनियों को संसाधित करने में परेशानी महसूस करते हैं, जिससे पढ़ने की गति धीमी हो सकती है या शब्दों को समझने में दिक्कत हो सकती है।

आइआइटी का प्रवेश द्वार • जागरण आर्काइव

**24** अप्रैल को कानपुर में 30 शिक्षकों से होने जा रही शुरुआत, दिसंबर तक होगा पूरा

साफ्टवेयर पर ऐसे होता डिस्लेक्सिया पीड़ित बच्चों का परीक्षण • जागरण

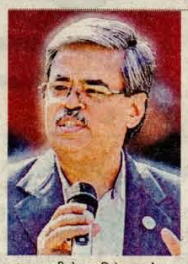
आइआइटी के उपनिदेशक प्रो ब्रजभूषण • स्वयं

### प्रशिक्षक इस तरह बच्चों की तकलीफों को करेंगे दूर

इसमें संवेदनशील शिक्षकों के चयन के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारियों को पत्र भेजा गया है। वहां से सूची आने के बाद इन शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाएगा और उन्हें टैब दिया जाएगा ताकि वह उस पर अपने विद्यालय में काम कर सकें। कानपुर के आसपास ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एनएलके एकेडमी के साथ ही सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों 24 अप्रैल को बुलाया गया है। उन्हें बच्चों की पहचान के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि इसके बाद वह अपनी कक्षा में ऐसे बच्चों की आसानी से पहचान कर सकें कि बच्चा वास्तव में तकलीफ में है या बेपरवाही कर रहा है। ये शिक्षक आगे प्रशिक्षक बनकर चेन को आगे बढ़ाएंगे। वहँ जिन बच्चों में दिक्कत होगी तो उन्हें अक्षर ज्ञान कराकर तकलीफ से उबारा जाएगा ताकि वह सामान्य बच्चों की तुलना में बेहतर विकास की राह पर दौड़ सकें। दिसंबर तक इसका प्रथम चरण पूरा होगा और इसके बाद आगे अन्य जिलों को शामिल किया जाएगा।

### डिस्लेक्सिया के प्रमुख लक्षण

- पढ़ते समय शब्दों को उलटना या मिलाना (उदाहरण: "बद" को "दब" पढ़ना)।
- धीरे-धीरे या रुक-रुक कर पढ़ना।
- वर्तनी में बार-बार गलतियां।
- लिखते समय अक्षरों या शब्दों का क्रम गलत करना।
- उच्चारण या शब्दों को याद करने में कठिनाई।

### डिस्लेक्सिया के कारण

- आनुवंशिक: यह परिवारों में चल सकता है।
- मस्तिष्क की संरचना और कार्यप्रणाली में अंतर।
- भाषा प्रसंस्करण क्षेत्रों में न्यूरोलाजिकल अंतर।

### प्रबंधन और सहायता

- **विशेष शिक्षा:** डिस्लेक्सिया के लिए अनुकूलित शिक्षण विधियां, जैसे मल्टीसेंसर लर्निंग।
- **मनोवैज्ञानिक सहायता:** आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए काउंसलिंग।
- **घर पर सहायता:** नियमित अभ्यास, धैर्य और प्रोत्साहन।

### ऐसे होगा समस्या का निदान

- मनोवैज्ञानिक या शैक्षिक विशेषज्ञ द्वारा मूल्यांकन।
- डिस्लेक्सिया वाले लोग उचित सहायता और रणनीतियों के साथ सफल और उत्पादक जीवन जी सकते हैं। कई प्रसिद्ध हस्तियाँ, जैसे टॉम क्रूज और रिचर्ड ब्रैनसन, डिस्लेक्सिया के साथ सफल हुए हैं।

Acknowledgment
Dana Foundation
STARTUP INCUBATION AND INNOVATION CENTRE IIT KANPUR